# केसरीमलजी सुराणा अभिनन्दन ग्रन्थ (फोल्डर नं. ०१२०४४)


मुख्य टाइटल

समर्पण

प्राक्कथन

प्रकाशकीय

सम्पादकीय

सन्देशे-शुभकामनाएँ

विषय- वर्गीकरण सूची

प्रथम खण्ड – व्यक्तित्व, कृतित्व, संस्मरण तथा काव्याँजली

कर्मयोगी श्री केशरीमलजी सुराणा जीवन परिचय---------- १

ग्रहों का गणित काकासा का फलित संस्मरण----------१९

संस्मरण

संस्मरणों की सौरभ ---------- २३

मेरे सर्वस्व मेरे भाई साहब..----------३१

खीर वापस कर दो ---------- ३२

मरना एक बार है ---------- ३२

जब पैर में काँटा चुभ गया ---------- ३३

कौन कहता है सुराणाजी कठोर हैं---------- ३३

अटल नियम पौरुष के खिलाडी ---------- ३३

मंत्र की शक्ति ये सब हमारी सन्ताने हैं---------- ३४

काकासा की विनम्रता---------- ३५

साक्षात राजा मोहजीत---------- ३५

वेदनीय कर्म समता से काटूंगा अरे ये तो साधु हैं---------- ३६

नानकशाही डण्डा हाथ में ले लो---------- ३६

पैसे- पैसे का हिसाब, जब घडी पुरस्कार में दी---------- ३७

वृथा आपको दोषी क्यों बनाऊ---------- ३८

मुझे लठ मारो ---------- ३८

जब गाडी का ब्रेक फैल हो गया---------- ३९

उनके शब्दों की शक्ति ---------- ४

कर्म के साथ धर्म का समन्वय ---------- ४०

आशीर्वचन

विरल विशेषाताओं के धनी---------- ४१

समाज के नररत्न---------- ४२

धर्म और कर्म के युगपत उपासक---------- ४२


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वाध्यायप्रिय श्रावक---- ४३
आगमिक श्रावक परम्परा के रत्न---- ४४
सेवाभावी श्रावक---- ४४
कमल से निस्पृह---- ४६
कलयुग के शिवशंकर---- ४६
जे कम्मे सूरा तो घम्मे सूरा---- ४६
कर्मशील योगी ---- ४८
अजब गजब रा श्रावक---- ४८
संयम की साकार मूर्ति ---- ४८
ब्रह्मचारी साधक ---- ४९
नव- समाज के निर्माता ---- ४९
अनासक्त योगी---- ४९
कंटिली झांडियों में मुस्कराता फुल ---- ५०
व्यक्तित्व व कृतित्व की पूजा ---- ५१
पडिमाधारी श्रावक---- ५१
निर्लिप्त जीवन---- ५२
शासनदेवी शासनभक्त---- ५२
नवीन प्रेरणाओं के उदघाटक ---- ५२
सदशिक्षा के प्रेरक---- ५३
मणि- कांचन सुयोग---- ५३
धर्म और कर्म के संगम ---- ५४
त्याग का नवीन आदर्श---- ५४
प्रकाश के अन्वेषक---- ५४
समय के सूक्ष्म अन्वेषक ---- ५५
आस्थाओं के सिंहासन पर आरुढ---- ५५
विसर्जन के पुनित प्रतीक---- ५५
विवेकानन्द की याद---- ५६
बेजोड संचालक---- ५६
कर्मशक्ति का अनूठा उदाहरण ---- ५६
सजग प्रहरी---- ५७
प्राणों के प्रतिष्ठापक---- ५७
अनुशासनप्रिय---- ५८
व्यक्ति नहीं, संस्था ---- ५८
साधना के सजग प्रहरी ---- ५९
गांधी और करतूरबा ---- ५९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विरत्न ओजस्वी वक्ता---------- ५९
उत्कृष्ट सेवक---------- ६०
जागरुक साधक ---------- ६०
साधना का त्रिवेणी संगम ----------६१
निस्पृह कार्यकर्ता ----------६१
फलदार वृक्ष----------६१
युवा ह्रदय ज्ञानपुज्ज ---------- ६२
गुणवान पूज्यते ---------- ६२
तपस्वियों के ताज---------- ६३
जीवन की जागती मशाल---------- ६३
मेढिभूअ श्रावक---------- ६४
श्रद्धा- सुमन
संस्था के प्राण ---------- ६५
एक युग द्रष्टा, एक युग गौरव---------- ६६
पुरुषार्थ की प्रतिमूर्ति ---------- ६७
संस्कार- सर्जन---------- ६८
अहम विजेता लोह पुरुष ---------- ६९
एक अदभूत शक्ति पुज्ज ---------- ७०
नरश्रेष्ठ योगी ---------- ७१
तेरापंथ जगत के प्रथम मालवीय---------- ७१
अदभूत व्यवस्थाशक्ति के प्रतीक----------७२
व्यक्ति नहिं एक संस्था ----------७३
श्रमण परम्परा के सूर्य ----------७३
मानवता के उन्नायक----------७४
निवृति और प्रवृत्ति के अदभूत संयोजक----------७४
अनुकरणीय आदर्श व्यक्तित्व ----------७५
राणावास का गांधी ---------- ६५
एकता व समन्वय के प्रतीक---------- ७६
त्याग के मूर्तिमान रुप ---------- ७६
A princely beggar---------- 77
सूर्य की चाल की तरह नियमित ----------७७
मारवाड का गरिमा पूर्ण नक्षत्र ---------- ७८
जैन समाज के उज्जवल नक्षत्र---------- ७८
एकनिष्ठ सेवक ---------- ७९
नवयुग का भागीरथ ---------- ७९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूझ-बूझ की त्रिवेणी---------- ८०
उच्चकोटि के शिक्षाशास्त्री ---------- ८०
आत्म- साधना के धनी----------८१
तेरापंथ के सुफी संत ----------८१
स्वभावसिद्ध गुणों के आकर---------- ८२
एक दुर्लभ विभूति---------- ८३
युगपुरुष नररत्न---------- ८४
सर्वस्व त्यागी महापुरुष---------- ८४
समर्पित व्यक्तित्व ----------८५
समाज के गौरव----------८५
प्रेम के पुजारी----------८५
निस्वार्थ सन्त- पुरुष ---------- ८६
गण एवं गणपति के प्रति समर्पित---------- ८६
नये मानव के निर्माता----------८७
एक प्रखर व्यक्तित्व----------८७
अविस्मरणीय कर्मयोगी----------८७
मानव सेवा के मन्त्रदाता ---------- ८८
छात्रों के प्राण ---------- ८९
त्यागलोक की दिव्य आत्मा ---------- ८९
कार्यकुशलता के जीवन्त प्रमाण---------- ९०
प्रथम अग्रेसर दीपक---------- ९०
संकल्पों के साधक----------९१
जितने कठोर, उतने कोमल----------९१
कलात्मक जीवन के उदघोषक ---------- ९२
संघर्ष में सुमेरुसम अटल ---------- ९२
सन्त या समाज सेवक ---------- ९३
सफल समाज सुधारक---------- ९३
समुद्र की तरह गहरे---------- ९३
विश्वासपात्र विभूति ---------- ९४
समय की कसौटी पर खरे ---------- ९४
अवर्णनीय गौरव गाथा---------- ९४
प्रतिभासम्पन्न व प्रेरक---------- ९५
अंध परम्पराओं के विरोधी---------- ९५
सच्चे छात्र- हितैषी ---------- ९५
जैनशासन के ज्योति पुञ्ज ---------- ९६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवादो से मुक्त---------- ९६
निर्धन के धन---------- ९६
काव्यांजलियाँ
सेवा रो ईतिहास---------- ९७
श्याम देह बापू सी---------- ९८
शत- शत वन्दन---------- ९८
काकासा की अलख कहानी---------- ९९
भूल्या कदे न जाय---------- १००
हर मधुपान के पश्चात भी----------१०१
प्रणाम ----------१०१
कुण्डलिया---------- १०२
तुम्हारे कर्म की गाथा ---------- १०३
जनम सुधार्यो ओ ---------- १०३
नव ईतिहास सुनाएँ---------- १०४
उभरा है व्यक्तित्व एक---------- १०४
कोटि- कोटि अभिनन्दन---------- १०५
युगों- युगों तक कई करेंगे याद---------- १०६
कर्मठ काको केसरी---------- १०६
रंग अनूठो ल्यावै---------- १०७
एक विभूति---------- १०८
लौह पुरुष---------- १०८
अभिनन्दन---------- १०९
श्रेय पथ पर ---------- १०९
तेरे ही गुण गायें हैं----------११०
यह जीवन लुटायो है ----------११०
अलबेला साधक ---------- १११
त्याग का उत्कर्ष---------- १११
जुगजुग जीयो----------११२
ऋषि केसरी----------११३
आस्थावान श्रावक ----------११३
काम कमाल करयो---------- ११४
श्रम सूं फल्यो बगीचो सारो---------- ११४
भक्तों में जिनका नाम हैं---------- ११५
शासन भक्त श्रावक ---------- ११५
कृपापात्र गुरुवर के----------११६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मारवाड रत्न ----------११६
दो मुक्तक ----------११६
सच्चा केसरी कहलाया ---------- ११७
हे मानव के मसीहा ---------- ११७
प्रणतांजलि ----------११८
योग्य व्यक्तित्व ----------११८
अभिनन्दन पत्र (विविध) ----------११९-१४६
नारीरत्न श्रीमती सुन्दरदेवी सुराणा (माताजी) ----------१४७
द्वितीय खण्ड - श्री जैन श्वेताम्बर मानव हितकारी संघ, (राणावास) और उसकी प्रवृतियाँ
कांठा का भौगोलिक और सांस्कृतिक परिवेश ---------- १५१
भिक्षुजन्मस्थली-कंटालिया ----------१५७
अभिनिष्क्रमणस्थलो- बगडी ---------- १६०
निर्वाण स्थली-सिरियारी ----------१६१
विधाभूमि-राणावास ---------- १६४
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी मानव हितकारी संघ ---------- १७०
उच्च शिक्षा का अनुपम स्थल ---------- १९४
महाविधालयीय छात्रों का आवासीय केन्द्र ---------- २१७
सर्वाडीगण शिक्षा का सिंह द्वार ---------- २२१
प्राथमिक-माध्यमिक छात्रों का आवास स्थल.. ---------- २३६
छात्र चिकित्सा केन्द्र-सेठ श्री मोतीलाल बेंगाणी.. ---------- २५१
ग्रामीण चिकित्सा केन्द्र श्री हस्तीमल धीसूलाल ---------- २५३
श्री पी एच रुपचन्द डोसी जैन उच्च प्राथमिक... ---------- २५४
संघ की विशाल ऐतिहासिक यात्रा ----------२५९
श्री अखिल भारतीय जैन महिला शिक्षण संघ.. ---------- २६८
तृतीय खण्ड - शिक्षा एवं समाज सेवा
शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन – श्री भवानीशंकर गर्ग ----------१
शिक्षा का उद्देश्य – डॉ. प्रभु शर्मा ----------६
शिक्षा और छात्र मनोविज्ञान – डॉ. जी. सी. राय ----------९
हमारे शिक्षालय और लोकोत्सव – पद्मश्री देवीलाल सामर ----------१३
लोकधर्मी प्रदर्शनकारी कलाओं की शैक्षिक उपयोगिता – डॉ. महेन्द्र भानावत ---------- १७
शिक्षा और संचार साधनों की भूमिका – प्रो. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ----------२१
अनौपचारिका शिक्षा संकल्पना एवं स्वरुप – डॉ. शिवचरण मनोरिया ---------- २६
माध्यमिक शिक्षा और सरकारी दृष्टि – श्रीमती सुषमा अरोड़ा ---------- ३३
शिक्षण में सृजनात्मकता – प्रो. भगवतीलाल व्यास ---------- ३८
ईम्तिहान पर क्षण भर – डॉ. विश्वम्भर व्यास ---------- ४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शिक्षा और बेरोजगारी – डॉ. जी. एल. चयलोत ---- ४७
छात्र असन्तोष क्यों – श्री बी. पी. जोशी ---- ५१
बच्चों में चरित्र निर्माण दिशा और दायित्व – श्री उदय जारोली ---- ५४
छात्रों में संस्कार निर्माण घर, समाज व शिक्षक की भूमिका – श्री भँवरलाल आच्छ ---- ६१
छात्र, छात्रावास और संस्कार – मुनि श्री मुखलाल ---- ६५
बच्चों का चारित्र-निर्माण – श्रीमती कुमुद गुप्ता ---- ६८
अभिभावकों का दायित्व – साध्वीश्री जयमाला ---- ७२
छात्र- अध्यापक सम्बन्ध – साध्वीश्री गुणितप्रभाश्रीजी ---- ७६
क्या धार्मिक शिक्षा उपयोगी है – साध्वीश्री रमाकुमारी ---- ७८
नैतिक शिक्षा की व्यावहारिकता – साध्वीश्री ललितप्रभाश्रीजी ---- ८१
विभिन्न छात्रवृत्तियाँ महत्व और प्रकार – श्री रणजीतसिंह भण्डारी ---- ८३
नारी शिक्षा का लक्ष्य एवं स्वरुप – श्रीमती विद्या बिन्दु सिंह ---- ८७
नारी शिक्षा का महत्व – साध्वीश्री जयश्री ---- ९२
सेवा आत्म कल्याण भी लोक कल्याणक भी – डॉ. नरेन्द्र भानावत ---- ९५
सेवा अर्थ और सही समझ – साध्वी श्री यशोधरा ---- ९७
समाज सेवा में नारी की भूमिका – श्रीमती मालती शर्मा ---- १०१
समाज के विकास में नारी का योगदान – साध्वीश्री मंजुला ---- १०५
जैन विश्वभारती लाडनूं एक परिचय – डॉ. कमलेशकुमार जैन ---- १०७
जनसारक्षरता और राष्ट्र निर्माण – प्रो. बी. एल. धाकड़ ---- ११२

चतुर्थ खण्ड - जैन धर्म, दर्शन एव साधना

नमस्कार महामंत्र एक विश्लेषण – युवाचार्य श्री महाप्रज्ञजी ---- ११७
जैन धर्म सर्व प्राचीन धर्मपरम्परा – डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन ---- १२७
जैन प्रमाणशास्त्र एक अनुचिन्तन – डॉ. दरबारीलाल कोठिया ---- १३०
जैन आचार दर्शन एक मूल्यांकन – डॉ. सागरमल जैन ---- १३७
विभिन्न दर्शनों में योगजन्य शक्तियों का स्वरुप – साध्वीश्री संघमित्राश्रीजी ---- १४८
भारतीय योग और जैन चिन्तनधारा – डॉ. छग्गनलाल शास्त्री ---- १५९
शब्द- अर्थ सम्बन्ध जैन दार्शनिकों की दृष्टि में – डॉ. हेमलता बोलिया ---- १७४
ब्रह्मांड, आधुनिक विज्ञान और जैन दर्शन – श्री बी. एल. कोठारि ---- १८०
जैन धर्म और लोकतन्त्र – प्रो. चन्द्रसिंह नानावटी ---- १८७
जैन रहस्यवाद - डॉ. पुष्पलता जैन ---- १९५
जैन दर्शन और ईश्वर की परिकल्पना – डॉ. महावीर सरल जैन ---- २०६
आत्मा स्वरुप विवेचन – श्री राजेन्द्र मुनि ---- २१२
जैन धर्म में कर्म-सिद्धांन्त – साध्वीश्री जतनकुमारि ---- २२०
संलेखना स्वरुप और महत्व – श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री ---- २२७
समाधिमरण – श्री चन्दन मुनि ---- २४२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तप एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान – मुनि श्री सुमेरमल---------- २४५
जैन परम्परा में संघीय साधना का महत्व – साध्वीश्री कंचनकुमारि ---------- २५१
द्रव्य एक अनुचिन्तन – वैद्यश्री राजेन्द्रकुमार जैन---------- २५५
जैन धर्म का प्राण- स्याद्वाद – डॉ. महावीरसिंह मुंडिया----------२५९
अपरिग्रहवाद आर्थिक समता का आधार – डॉ. फूलचन्द्र जैन प्रेमी----------२६५
अनुयोग और उनके विभाग – मुनि श्री किसनलाल ---------- २६९
जैन धर्म के मूल तत्व एक परिचय – श्री स्वरूपसिंह चुडावत ---------- २७५
उपाध्याय पद स्वरुप और दर्शन – श्री रमेश मुनि शास्त्री----------२७९
जैन मुनि और वस्त्र- परम्परा – मुनि श्री श्रीचन्द----------२८४
दशवैकालिक और जीवन का व्यावहारिक दृष्टिकोण – साध्वीश्री कनकश्रीजी---------- २८७
श्रमण चर्या विषयक कुन्दकुन्द की दृष्टि – डॉ. रमेशचन्द्र जैन----------२९७
पडिमाधारी श्रावक एक परिचय – साध्वीश्री जतनकुमारी ---------- ३०३
तेरापंथ दर्शन – मुनिश्री उदितकुमार ----------३०५
तेरापंथ और अनुशासन – मुनि श्री सुमेरमल ---------- ३०९
अणुव्रत और अणुव्रत आन्दोलन – श्री सतीशचन्द्र जैन---------- ३१२
जैन दर्शन में मानववादी चिन्तन – श्री रतनलाल कामड़---------- ३१९
स्वानुभूति की ओर अन्तर्यात्रा – श्री सोहनराज कोठारी---------- ३२७

पंचम खण्ड - जैन साहित्य एवं संस्कृति

तेरापंथी जैन व्याकरण साहित्य – साध्वी श्री कनकप्रभाश्रीजी---------- ३३१
संस्कृत- जैन-व्याकरण परम्परा – डॉ. गेहरीलाल शर्मा----------३४३
जैन आयुर्वेद परम्परा और साहित्य – डॉ. राजेन्द्रप्रसाद भटनागर----------३६३
जैन मंत्र शास्त्रों की परम्परा और स्वरुप – श्री सोहनलाल गौ.---------- ३७४
जैन ज्योतिष प्रगति और परम्परा – डॉ. राजेन्द्रप्रसाद भटनागर ----------३९२
जैन गणित परम्परा और साहित्य – वैद्य सावित्री देवी ----------४१४
जैन साहित्य में कोश परम्परा – श्री विद्यासागर राय---------- ४१९
जैन छन्द शास्त्र परम्परा – श्री नरोत्तम नारायण गौतम---------- ४३४
तेरापंथ में संस्कृत का विकास – मुनि श्री विमलकुमार ----------४३९
राजस्थान का जैन संस्कृत साहित्य – डॉ. प्रेमचंद रांका---------- ४४२
राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्यकार – डॉ. शक्तिकुमार शर्मा ---------- ४४७
धूर्ताख्यान पार्यन्तिक व्यंग्य- काव्य कथा – डॉ. श्री रंजनसूरिदेव ----------४६२
प्राकृत कथा साहित्य का महत्व – डॉ. उदयचन्द जैन----------४६६
प्राकृत विभिन्न भेद और लक्षण – श्री सुभाष कोठारि---------- ४७२
अपभ्रंश साहित्य- परम्परा – डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री ----------४८०
अपभ्रंश साहित्य में कृष्णकाव्य – डॉ. हरिवल्लभ चुनीलाल भायाणी ---------- ४८७
अपभ्रंश साहित्य में रामकथा – डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन ---------- ४९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपभ्रंश चरिउ काव्यों की भाषिक संरचनाएँ – डॉ. कृष्णकुमार शर्मा----------५०२
अपभ्रंश के प्रबन्ध काव्य – डॉ. प्रेमसुमन जैन----------५१०
राजस्थानी जैन साहित्य की रुप परम्परा – डॉ. मनमोहनस्वरूप नाथूर ----------५१६
तेरापंथ का राजस्थानी गध साहित्य – मुनि श्री दुलहराज----------५२६
राजस्थानी दिगम्बर जैन गधकार – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल----------५४५
राजस्थानी काव्य परम्परा में सुदर्शन चरित – मुनिश्री गुलाबचन्द निर्मोही ---------- ५५९
महाकवि धनपाल व्यक्तित्व और कृतित्व – श्री मानमल कुदाल----------५७७
आचार्य नेमिचन्द्र सूरि और उनके ग्रन्थ – श्री हुकमचन्द जैन---------- ५८३
आचार्य रामचन्द्र- गुणचन्द्र एवं उनका नाट्य दर्पण – डॉ. कमलेशकुमार जैन----------५८९
अभयसोमसुन्दर कृत विक्रम चौबोली चउपि – डॉ. मदनराजजी महेता---------- ५९४
महान साहित्यकार तथा प्रतिभाशाली- श्री मज्जयाचार्य – साध्वीश्री चीकांजी नाहर-------- ६०१
आचार्य तुलसी एक साहित्यिक मूल्यांकन – डॉ. भँवर सुराणा ---------- ६०६
आगम पाठ संशोधन एक समस्या एक समाधान – मुनिश्री दुलहराज ---------- ६०९
तेरापंथ सम्प्रदाय और नई कविता – प्रो. बी. एल. आच्छा ---------- ६१७
जैन भक्ति साहित्य – प्रो. महेन्द्र रायजावा----------६२५
रयणसेहरी कहा एवं जायसी का पदमावत – कु. सुवा खाव्या----------६३२
जैन कथा साहित्य में नारी – डॉ. सुशिला जैन ----------६४२
हिन्दी जैन गीतिकाव्य में कर्म-सिद्धांन्त – प्रो. श्रीचन्द जैन ---------- ६४७
जैन कवियों के ब्रज भाषा प्रबन्ध काव्य – डॉ. लालचन्द जैन ---------- ६५७
हिन्दी के नाटकों में तीर्थंकर महावीर – डॉ. लक्ष्मीनारायण दुबे---------- ६६०

षष्टम खण्ड - ईतिहास और पुरातत्व

वैशालि गणतन्त्र का ईतिहास – श्री राजमल जैन----------१
ओसियां की प्राचीनता – प्रो. देवेन्द्र हाण्डा----------११
विदेशो में जैन धर्म – डॉ. भागचन्द्र जैन---------- २०
मेवाड के शासक एवं जैन धर्म – श्री जसवन्तलाल महेता----------२७
नयचन्द्र सूरिकृत- हम्मीर महाकाव्य और सैन्य व्यवस्था – डॉ. गोपीनाथ शर्मा ---------- ४०
गोडवाड के जैन शिलालेख – श्री रामवल्लभ सोमानी----------४३
नागौर के जैन मन्दिर और दादा बाडी – श्री भँवरलाल नाहटा----------४७
सिरोही जिले में जैन धर्म – डॉ. सोहनलाल पाटनी----------५५
तमिलनाडु में जैन धर्म और जैन संस्कार – मुनिश्री सुमेर मल----------५८
जैन जातियों का उदभव एवं विकास – डॉ. कैलाशचन्द्र जैन----------६१
जैन जाति और उसके गोत्र – डॉ. बलवन्तसिंह महेता---------- ६३
भट्टारक परम्परा – डॉ. बिहारीलाल जैन---------- ६६
जैन यति परम्परा – श्री अगरचन्द नाहटा---------- ७१
तेरापंथ की अग्रणी साध्वियाँ – साध्वीश्री मधुस्मिता ----------७९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माण्डु के जावड शाह – डॉ. सी. सी. क्राठझे ---------- ८६
तेरापंथ के दृढधर्मी श्रावक अर्जुनलालजी पोरवाल – मुनिश्री बुद्धमल ---------- ९४
तेरापंथ के महान श्रावक – मुनि श्री विजयकुमार ---------- ९९
बलिदान और शौर्य की विभूति भामाशाह – डॉ. देवीलाल पालीवाल ---------- ११०
जोधपुर के जैन वीरों सम्बन्धी ऐतिहासिक काव्य – श्री सौभाग्यसिंह शेखावत ---------- ११५
अहमदाबाद युद्ध के जैन यौद्धा – श्री विक्रमसिंह गुल्वोज ---------- १२९
मेवाड के जैन वीर – श्री शम्भूसिंह ---------- १३४
जैन संस्कृति की विशेषतायें – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी ---------- १४४
जैन मूर्तिकला की परम्परा – डॉ. मारुतिनन्दन प्रसाद ---------- १५०
जैन कला विकास और परम्परा – डॉ. शिवकुमार नामदेव ---------- १५३
राजस्थान की जैन कला – श्री अगरचन्द नाहटा ---------- १६३
राजस्थान जैन चित्रकला कुछ अप्रकाशित साक्ष्य – श्री ब्रजमोहनसिंह परमार ---------- १७१
मेवाड की प्राचीन जैन चित्रांकन- परम्परा – डॉ. राधाकृष्ण वशिष्ठ ---------- १७४
जैन धर्म और आधुनिक चिकित्सा विज्ञान – आचार्य राजकुमार जैन ---------- १७९
राजस्थान स्वातन्त्र्य संघर्ष और जैन समाज – प्रो. तेजसिंह तरुण ---------- १८६

सप्तम खण्ड - आंग्ल भाषा

Jainism as a faith – Shreechand Rampuria ---------- 1
Jain literature as a source of social…- Dr. G. N. Sharma ---------- 7
Rightness of action and jaina ethics – Dr. K. C. Sogani ---------- 13
Mahavira and ahimsa – Dr. D. S. Kothari ---------- 18
The concept of ahimsa in the acaranga – Dr. Veena Agarwal ---------- 21
Jinasena and his political philosophy – Rajmal Jain ---------- 26
Jaina path of education – B. K. Khadabadi ---------- 33
A short sketch of early education – S. Mookarjee ---------- 38
Art and jconography under jainism jewellery in jain literature of rajasthan – Kusum Mehta ---------- 43
Scouting in educational perspective – J. S. Mehta ---------- 45
Education in economic perspective – B. L. Dhakar ---------- 49
Community education in national perspective – Mrs. Kailash Mehta ---------- 57
Social justice to mankind - Pushpa Kothari ---------- 61
Ryle's concept of the category mistake - Jagat Pal ---------- 65
The saint of ranawas - S. C. Tel ---------- 71

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org